ॐ

श्री

महाराज़्ञी चालीसा

लेखक

चमन लाल राज़दान

ॐ

श्री महाराज्ञी चालीसा

श्री महाराज्ञी - भगवत्यै नमः

दोहा

इच्छा ज्ञान क्रिया शक्ति, हरण करो अवगुण ।
तीनवर्ग की इष्ट त्रिपुरा, नाम जपो प्रतिदिन ॥

जय जय जय ओम् क्षीर भवानी

श्यामा लंका तुलमुल महाराज्ञी ॥१॥

दैत्य रावण महा दुःखदाई

सौभाग्य दायक तामस-देवी ॥२॥

आज्ञा पालन श्री अंजनी नंदन

पाँचाल पर्वत कपालमोचन ॥३॥

तोड़ के बंधन प्रकट सतीसर
प्रादुर्भाव माँ सिंधु तट पर ॥४॥

केसर भूमि संत ऋषि की
स्थल सुशोभित सुन्दर नगरी ॥५॥

वास यहाँ सिद्ध-पीठ तिकोना
हरमुख दृष्टि लक्ष्मी तरुणा ॥६॥

विमर्श शक्ति सात्विक स्वरूपा
सत्वगुण मूर्ति दिव्य सुर-उत्तमा ॥७॥

प्रतिमा शक्ति जल से निकली
भूतेश्वर भैरव महा सत्ता तेरी ॥८॥

लिंग मिला जो नाग सरोवर
साक्षात दर्शन जय हो शङ्कर ॥९॥

त्रैलोक पालक त्रिवर्ग त्रिपुरा
सहस्त्र सूर्य उदय तेरी आभा ॥१०॥

त्रिनेत्र रवि शशि और अग्नि
घर-घर पूजन त्र्यम्बक देवी ॥११॥

चतुर्भुज माता जग सकलजननी
कमल खड्ग कलश घट धारी ॥१२॥

आद्य शङ्कर त्रिपुरा सुन्दरी
'सौन्दर्य लहरी' महिमा शक्ति ॥१३॥

सर्प, अनन्त संग जो लायो
सीता राम लक्ष्मण भी आयो ॥१४॥

तन मन अर्पण भुजंग जनेऊ
विद्याराज्ञी शक्ति पीठ धराऊ ॥१५॥

शुद्ध-मधुर तेरा वैष्णव भोजन
इष्ट है देवी आत्म-समर्पण ॥१६॥

नागराज दर्शन बीच सरोवर
जगदम्बा मंत्र भोज पत्ती पर ॥१७॥

अष्टमी पालन अष्टधा शक्ति
आदि शक्ति, तत्त्व ज्ञान ज्योति ॥१८॥

यन्त्र बिन्दु श्रीचक्र षटकोण
सद्गुण-दाता प्रणव है ॐ ॥१९॥

वाणी स्वरूपा कला तेरे चौसठ
आश्रय देवी हरण हों संकट ॥२०॥

ब्रह्मा विष्णु संग है शङ्कर
वन्दना मंत्र पञ्चदश अक्षर ॥२१॥

नाग सरोवर दृश्य अति शोभित
जप कुथिका आकार है अद्भुत ॥२२॥

पूजा-थाली 'कन्द व्यनॅ पोश'
दुग्ध कमण्डल प्रवाह जल कोश ॥२३॥

पहरी खडा श्री हनुमान गोसाई
मुक्ति प्रदायिनी मोक्ष त्रिपदी ॥२४॥

परिक्रमा में द्वीप की माला
घण्टा ध्वनि में नाद है मेरा ॥२५॥

साधक सनमुख दर्शन पायो
रघुनाथ शक्ति पीठ दिखायो ॥२६॥

सांध्य पूजा सिद्धिदात्री देवी
सुगन्ध-सुमन अखण्ड ज्योति ॥२७॥

जल-कुण्ड दर्शन वर्ण बहुरंगा
ॐ है दर्शन ब्रह्म स्वरूपा ॥२८॥

पुनः प्रतिष्ठित कृष्णजू टपिलों
रुक गया नागराज फन फहलायो ॥२९॥

भजन कीर्तन हवन जग रजनी
'अर्धरात्रि' प्रतिबिम्ब महाराज्ञी ॥३०॥

संत जनों की मस्तक रेखा
सिद्धि बुद्धि शाम्भवी मुद्रा ॥३१॥

दर्शन माता विवेकानन्द को
दीक्षा ले वरदान मिला जो ॥३२॥

ज्ञानी ध्यानी और संत सन्यासी
उच्चारण में त्रिपदा गायत्री ॥३३॥

तीर्थ स्नान सिंधु प्रवाह पर
नाद बिन्दु में अर्धनारीश्वर ॥३४॥

'लूचि' प्रसाद मन को भावत
सकल अलौकिक स्वाद है पावत ॥३५॥

पराशक्ति रूपा शाक्त है चर्चा
अष्टसिद्धि वश चित्त शक्तिरूपा ॥३६॥

कुण्डलीप श्रद्धा करत नर नारी
सत्-चित्त आनन्द दिव्य संतोषी ॥३७॥

पाठ करे जो यह चालीसा
आनन्द के संग सुख पावेगा ॥३८॥

श्रवन पठन दिव्य-दीक्षा पाओ
नित्य कर्म में सब अपनाओ ॥३९॥

'नन्हा' दर्शक अश्रु-व्यथा में
वर दो माता विस्थापित मैं ॥४०॥

दोहा

परिपालिका ब्रह्माण्ड की, देवी द्वितीया कहलाई ।
ब्रह्मचारिणी हो कष्ट हरण, सुनवैया भैरव-भैरवी ॥

माजि-पद

सॅहस प्यठ राजिरेन्य प्रातः कालस

भखत्यन पनॅन्यन हाल बोज़ान ।

सॉरी प्रारान ब्रोंह ब्रोंह पकनस

मॉज्य छख नादन कन थावान ॥

मॉज्य छख अम्बा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख राज्ञया बिहिथ थज़रस ॥ १ ॥

मॉज्य छख भैरवी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख भुवनेश्वरी बिहिथ थज़रस ॥ २ ॥

मॉज्य छख पार्वती रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख पोखर्यबलॅ बिहिथ थज़रस ॥ ३ ॥

मॉज्य छख चण्डिका रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख वैष्णवी बिहिथ थज़रस ॥ ४ ॥

मॉज्य छख लक्ष्मी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख लुकभवनॅ बिहिथ थज़रस ॥ ५ ॥

मॉज्य छख मृडॉनी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख मनिगामॅ बिहिथ थज़रस ॥ ६ ॥

मॉज्य छख महोदरी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख मंज़गामि बिहिथ थज़रस ॥ ७ ॥

मॉज्य छख कालिका रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख कूटीर्तिथॅ बिहिथ थज़रस ॥ ८ ॥

मॉज्य छख सरस्वती रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख वेरनागॅ बिहिथ थज़रस ॥ ९ ॥

मॉज्य छख श्रद्धा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख शारदा बिहिथ थज़रस ॥ १० ॥

मॉज्य छख वरदा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख वोमायि बिहिथ थज़रस ॥ ११ ॥

मॉज्य छख यक्षिणी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख बॉद्यपोरि बिहिथ थज़रस ॥ १२ ॥

मॉज्य छख शक्ति रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख शारिका बिहिथ थज़रस || १३ ||

मॉञ्ज्य छख चण्डी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख चॅण्ड्यगामॅ बिहिथ थज़रस || १४ ||

मॉज्य छख श्यामा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख शुपियनॅ बिहिथ थज़रस || १५ ||

मॉज्य छख ईश्वरी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख ज़ाला बिहिथ थज़रस ॥ १६ ॥

मॉज्य छख गायत्री रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख ब्रारिआन्गनॅ बिहिथ थज़रस ॥ १७ ॥

मॉज्य छख सावित्री रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख त्रिपुरा बिहिथ थज़रस ॥ १८ ॥

मॉज्य छख भवॉनी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख ब्रारिमॉज बिहिथ थज़रस || १९ ||

मॉज्य छख चन्द्रिका रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख चक्रेश्वरॅ बिहिथ थज़रस || २० ||

मॉज्य छख वसुधा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख वितस्ता बिहिथ थज़रस || २१ ||

मॉज्य छख दीर्घा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख दुर्गानागॅ बिहिथ थज़रस ॥ २२ ॥

मॉज्य छख प्रभा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख परबतॅ बिहिथ थज़रस ॥ २३ ॥

मॉज्य छख सिद्धिदा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख रॉयथनॅ बिहिथ थज़रस ॥ २४ ॥

मॉज्य छख गंगा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख गंगॅबलॅ बिहिथ थज़रस ॥ २५ ॥

मॉज्य छख बाला रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख दीवीआंगनॅ बिहिथ थज़रस ॥ २६ ॥

मॉज्य छख मृग्या रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख वॅड्यपोरि बिहिथ थज़रस ॥ २७ ॥

मॉज्य छख अम्बिका रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख नागॅबलॅ बिहिथ थज़रस || २८ ||

मॉज्य छख ब्राह्मणी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख भर्गशिखा बिहिथ थज़रस || २९ ||

मॉज्य छख मङ्गला रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख दीवीबलॅ बिहिथ थज़रस || ३० ||

मॉज्य छख कात्यायनी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख कोंसरनागॅ बिहिथ थज़रस ॥ ३१ ॥

मॉज्य छख चामुण्डा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख दिवसरॅ बिहिथ थज़रस ॥ ३२ ॥

मॉज्य छख स्वरूपा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख वरमुलि बिहिथ थज़रस ॥ ३३ ॥

मॉज्य छख शाम्भवी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख शीतला बिहिथ थज़रस ॥ ३४ ॥

मॉज्य छख भाविनी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख खन्नभरनॅ बिहिथ थज़रस ॥ ३५ ॥

मॉज्य छख प्रबुद्धा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख टॅकरॅ बिहिथ थज़रस ॥ ३६ ॥

मॉज्य छख मोक्षदा रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख ज़िष्ठा बिहिथ थज़रस || ३७ ||

मॉज्य छख भ्रामरी रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख हॉरी बिहिथ थज़रस || ३८ ||

मॉज्य छख क्रियावती रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख कॉली बिहिथ थज़रस || ३९ ||

मॉज्य छख अनन्ता रछिवॅन्य ज़गतस
सॉन्य छख अकिनगामॅ बिहिथ थज़रस ॥ ४० ॥

माजि-पद

दीवी तॅ दिवता सार्यसॅय रातस
भखत्यन सॅूत्य-सॅूत्य पोश च़ारान ।
दॅव्ध ह्यथ प्रारान अर्पण करनस
पाठपूज़ कॅर्य-कॅर्य नागस बावान ॥

अर्थ संदर्भ

दोहा

(i) इच्छा, ज्ञान तथा क्रिया

यह तीन शक्तियाँ हैं। जब शिव अपने स्वरूप में केवल थे, तब उनके मन में अकस्मात् सृष्टि करने के लिए इच्छाशक्ति का उदय हुआ, फिर इच्छाशक्ति से ज्ञानशक्ति और ज्ञानशक्ति से क्रियाशक्ति का उदय हुआ।

(ii) तीन वर्ग, इष्ट त्रिपुरा

जगत में जो कुछ भी तीन वर्गों के रूप में बंधा हुआ है वह सब वास्तविकता में त्रिपुरा नाम का ही अनुसरण करता है। भूः भुवः स्वः तीनों लोकों पर अपना प्रभुत्व रखने वाली देवी त्रिपुर सुन्दरी है। त्रिपुरा कई कश्मीरी घरानों की इष्ट देवी है।

पद

(1) श्यामा लंका

लंका में रावण के घर जो श्यामा के नाम से पूजी जाती थी, वही अब कश्मीर में महाराज्ञी के नाम से सर्वत्र विख्यात है ।

(4-i) प्रादुर्भाव

कश्मीर घाटी के तुलमुल स्थान में आप ने सिंधु प्रवाह पर वास करने की इच्छा प्रकट की । इस तरह से माता राज्ञी देवी का प्रादुर्भाव हुआ ।

(4-ii) सिंधु तट

कश्यपमर (कश्मीर) की सिंधु सारणी जिसके तट पर तुलमुल गाँव बसा है ।

(6) सिद्ध-पीठ तिकोना

कृपया ।७-i में देखिये ।

(8-i) प्रतिमा शक्ति

ऐसा माना जाता है कि माता राज्ञी देवी की प्रतिमा सरोवर (कुण्ड) के जल से ही निकली है ।

(8-ii) भूतेश्वर भैरव

माताराज्ञी का कुल भैरव भूतेश्वर है । आपके साथ भैरव रूपी शङ्कर विराजमान हैं ।

(9) लिंग

जल स्रोत (नाग) की सफाई (नाग पाजुन) करते हुए शिवलिंग अपने एक भक्त को मिला जिसे उन्होंने अपने ही निकट गाँव के एक मन्दिर में रखा जहाँ उसकी पूजा अर्चना की जाती थी ।

(10) सहस्त्र सूर्य

महामाया जो एक साथ उदय किये हुए प्रातः हज़ारों सूर्यों की सी आभा (दीप्ति) लिये हुई हैं।

(11) त्रिनेत्र

सूर्य, चन्द्रमा और अग्निदेव जैसे प्रकाशमान तीन नेत्रों को धारण किए हुई हैं।

(12) चतुर्भुजमाता

माता चार भुजाओं में कमल, खड्ग, कलश तथा घट धारण किए हुई हैं।

(13-i) आद्य शङ्कर (13-ii) सौन्दर्य लहरी

जब आद्य शङ्कराचार्य कश्मीर आए तो उनके मन में 'अहं ब्रह्म' (मैं ब्रह्म हूँ) के अतिरिक्त कुछ नहीं सूझता था परन्तु जब उन्हें शक्ति की महिमा के बारे में यहाँ पता चला तो शक्ति-प्रशंसा में उन्होंने 'सौन्दर्य लहरी' लिखी जिसमें शक्ति (त्रिपुरसुन्दरी) की महिमा एवं सौन्दर्य का ही वर्णन किया गया।

(14-i) सर्प अनन्त

माता जब लंका से तुलमुल आईं तो वे 360 सर्प तथा अनन्त को साथ लाईं। अनन्त सर्पों का मुख्य (जिसके सहस्त्रफण हैं) तथा विष्णु का शयन है।

(14-ii) सीता राम लक्ष्मण

हर पूर्णमाशी पर श्री राम, सीता तथा लक्ष्मण विधिवत महाराज्ञी के अस्थापन की यात्रा करते हैं।

(15) भुजंग जनेऊ

माता ने जनेऊ के बदले सर्प को पहने रखा है।

(16) इष्ट

कई कश्मीरी घरानों की इष्ट देवी माता राज्ञी है।

(17-i) नागराज दर्शन

माता के कई भक्तों ने नाग देवता का दर्शन, जो सरोवर (कुण्ड) में रहता है, किया है। इस अद्भुत दृश्य के फोटूचित्र लिये गये हैं ।

(17-ii) मंत्र (श्लोक)

महाराज्ञी तीर्थ के पुनः प्रतिष्ठित होने पर ज्यों ही भक्तों द्वारा प्रतिष्ठा तथा पूजा इस अमृत कुण्ड में सम्पन्न हुई, त्योंही कुण्ड में एक भोजपत्र तैरता हुआ भक्तों को दृष्टिगोचर हुआ । इसको उठाने पर मन्त्र (श्लोक) अंकित पाया गया ।

(18-i) अष्टधा शक्ति

जगत्माता एक होते हुए भी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चंद्रमा, सूर्य तथा यजमान में आठ प्रकार की शक्ति के रूप में अवश्य रक्षा करने वाली हैं ।

(18-ii) तत्त्व ज्ञान-ज्योति

तत्त्व ज्ञानमयी होने के कारण यह आर्या हैं । ज्ञान ज्योति दात्री होने के कारण यह सरस्वती हैं ।

(19-i) यन्त्र बिन्दु

सम्भव है कि तन्त्र, यन्त्र और मन्त्र की तिकोनी आराधना ही महाराज्ञी को प्रिय है । इसी कारण राज्ञी-कुण्ड के मध्य निर्मित मन्दिर में इसी 'राज्ञी-यन्त्र' की प्रधान रुप से पूजा की जाती है । जिस प्रकार शक्ति त्रिकोणरूपिणा है उसी प्रकार परमशिव बिन्दुस्वरूप है जिनका सदा अविनाभाव सम्बन्ध है अर्थात यह दो भिन्न नहीं, एक हैं। यहाँ अंतर केवल इतना है कि शैव शिव को विशिष्टता देते हैं तथा शाक्त शक्ति को और परम तत्त्व को शैव परमशिव कहते हैं तथा शाक्त पराशक्ति । पराशक्ति अपने शत्रुओं का भी उद्धार करती है ।

(19-ii) चक्र षटकोण

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक कुण्ड़लिनी शक्ति का सजग आरोहण। शक्ति से संबंधित चक्र शक्तिचक्र कहलाते हैं। इनका स्वरूप अधोमुख त्रिकोण होता है जैसे -▽। शिव से संबंधित चक्र शिवचक्र कहलाते हैं। इनका स्वरूप ऊर्ध्वमुख त्रिकोण होता है जैसे - △। दोनों त्रिकोणों को मिलाकर इनका आकार बनता है जैसे - ✡ जिनके ज़ावियों की संख्या का जोड़ 360 बनता है।

(19-iii) प्रणव है ॐ

सरोवर के जल के ऊपर फूलों के बीच में ॐ आकार का चित्र स्वतः बना हुआ कभी-कभी पाया जाता है जो माता के दर्शन का प्रतीक माना जाता है।

(20) कला चौसठ

माता 64 कलाओं से ओत-प्रोत है।

(21-i) ब्रह्मा विष्णु शङ्कर

माता तीन देवता ब्रह्मा, विष्णु तथा शङ्कर (रुद्र) की पूजनीय है। यह देवता कल्प के अन्त में माता के ही स्वरूप में लय हो जाते हैं।

(21-ii) पञ्चदश-अक्षर

माता का 15 अक्षरों वाला मूल (महा) मन्त्र यह है:

ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौ भगवत्यै राज्ञयै ह्रीं स्वाहा।

1 2 2 2 2 2 4 3 2 2

(22-i) नाग सरोवर (22-ii) जप कुथिका

सरोवर (कुण्ड), जो जपमाला की कुथिका के अनुरूप है, का दृश्य बहुत ही शोभनीय है।

(23) पूजा-थाली

पूजा-थाली धूप, अगरबत्ती, कपूर के अतिरिक्त कन्द, व्यनॅ (एक खुशबूदार जड़ी-बूटी जिसकी उपज नदियों के किनारों पर होती है) तथा फूलों से भरी हुई मिलती है जो पूजा के काम आते हैं।

(26) रघुनाथ

श्री रघुनाथ गाडरू को माता ने स्वप्न में दर्शन दिये थे तथा अपनी उपस्थिति के बारे में बताया था।

(28-i) बहु-रंगा

इस कुण्ड की एक विशेषता यह भी है कि इसके जल का वर्ण (रंग) समय-समय पर बदलता रहता है। जब कुण्ड के जल का वर्ण (रंग) काला पड़ जाये तो किसी अनिष्ट की सम्भावना होती है।

(28-ii) ॐ है दर्शन

कृपया 19-iii में देखिए ।

(29) कृष्णजू टपिलों

पंडित कृष्णजू टपिलों की अनन्य भक्ति तथा उपासना से प्रसन्न होकर भगवती ने उन्हे स्वप्न में दर्शन देकर आदेश दिया कि वह उनके जलस्वरूपा तीर्थस्थान की खोज करे (जो पुनः प्रतिष्ठित होना है) तथा उनकी नौका का पथ प्रदर्शन एक तैरता हुआ नाग करेगा और नौका के तैरते-तैरते वह नाग जहाँ अपना फन ऊपर उठाकर खड़ा हो जाएगा, वहीं महाराज्ञी का पावन तीर्थ है ।

(30) अर्धरात्रि

'अर्धरात्रि' नामक एक संस्था है जो शुक्लपक्ष की प्रत्येक अष्टमी की रात्रि पर तुल्मुल में भजन-कीतर्न आयोजित करती थी । अब यह संस्था जम्मू में माता का स्थापन (निवासस्थान) बनाने तथा इसकी देखरेख में सक्रिय है ।

(31) मस्तक रेखा

ललाट पर लिखे बुरे अक्षरों को कौन टाल सकता है? केवल माता ही ऐसी समर्थशाली है जिनकी अनुकम्पा (दीक्षा) से भक्तजन शाम्भवी मुद्रा को प्राप्त करते हैं।

(32) विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द जी जब इस पवित्र धाम पर पहुँचे तो उनके मन में कुछ शंका पैदा हुई। उनको समाधि में माँ से कुछ आदेश हुआ जिससे उनका अहंकार नष्ट हो गया तथा तब से माँ की सर्वव्यापकता का भाव जाग्रत हुआ।

(33) त्रिपदा गायत्री

श्री त्रिपदा गायत्री यह है :

ॐ राज्य प्रदायै विद्महे पञ्चदशाक्षर्यै धीमहि तन्नो राज्ञी प्रचोदयात्।

इसका तीन बार उच्चारण करने से मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

(34) नाद बिन्दु

नाद बिन्दु के संयोग से शिव अर्धनारीश्वर कहलाए । जो आद्य शक्ति त्रिपुरसुन्दरी ऊंकार के ऊपर नाद बिन्दु रूप में विराजमान है, वही साक्षात अर्धनारीश्वर है ।

(35) 'लूचि'

नर्म पूरी जो तेल में बनती है खाने में, विशेषकर कहवा चाय के साथ, स्वादिष्ट लगती है तथा प्रसाद के तौर पर बाँटी जाती है ।

(36-i) शाक्त चर्चा

कृपया 19-i में देखिए ।

(36-ii) अष्ट सिद्धि

अष्ट सिद्धियाँ यह हैं: अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्यं, ईशित्वं तथा वशित्वं । जो भक्तजन पराशक्ति (यह चित्त शक्तिरूप में सर्वत्र व्याप्त है) का चिन्तन करते हैं उन्हें यह सिद्धियाँ वश में हो जाती हैं ।

(39) श्रवण पठन

निश्चय जानो इस चालीसा के श्रवण और पठन मात्र से भक्त लोगों की सर्वसिद्धियाँ (सारी कामनाएं) पूरी होंगी क्योंकि यह भैरव - भैरवी संवाद पर ही आधारित है जैसा श्लोक 66 पृष्ठ 35 - श्री श्री महाराज्ञी प्रादुर्भाव पुस्तक में वर्णित है ।

(40) 'नन्हा' दर्शक

एक सुशील युवती भक्त आँसू बहाती तथा अपनी व्यथा सुनाती हुई माता से प्रार्थना करती है कि हे माता ! मुझे वरदो ताकि मैं इस विस्थापन से छूटकर आपके दर्शन दुबारा कर सकूँ । वास्तव में देखा जाये तो यह संसार हमारे लिए विस्थापन ही है क्योंकि जिस 'घर' से हम यहाँ आए हैं, अपना-अपना कार्य समाप्त करके हमें उस घर को वापस लौट जाना है ।

दोहा

(i) द्वितीया

देवी की नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हे 'नवदुर्गा' कहते हैं। 'द्वितीया' नवदुर्गा का ब्रह्मचांरिणी रूप है जिसका स्वभाव ब्रह्मस्वरूप प्राप्ति कराना है।

(ii) सुनवैया भैरव-भैरवी

भैरव (सदाशिव का विश्वोतीर्ण रूप) से भैरवी (इसी का विश्वमय रूप -आदिशक्ति) कहती हैं कि आप मुझे माताराज्ञी भवानी की महानता के बारे में कुछ बतायें। तन्त्र - परम्परा के अनुसार इन दोनों के बीच का संवाद श्री श्री महाराज्ञी प्रादुर्भाव नामक पुस्तक में मिलता है।

संदर्भ

(1) 'श्री श्री महाराज्ञी प्रादुर्भाव':
अनुवादक हिन्दी - पं० प्रेम नाथ हण्डू
प्रकाशक - श्री परमानन्द शोध संस्थान
श्रीनगर, कश्मीर - 1981 ईस्वी

(2) 'पञ्चस्तवी':
टीका-लेखक - स्वर्गीय पं० प्रेमनाथ शास्त्री
प्रकाशक - विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय,
गोल गुजराल, जम्मू

(3) 'श्री दुर्गासप्तशती':

प्रकाशक - गीताप्रेस, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश

संवत् - 2042 (42वाँ संस्करण)

(4) 'श्री क्षीरभवानी तीर्थस्थान पर एक विहंगम दृष्टि'

संपादक - पं॰ महेश्वर नाथ रैणा 'संतोषी'

पं॰ अमर नाथ साबनी

प्रकाशक - धर्मार्थ ट्रस्ट, जम्मू व कश्मीर - 1989 ईस्वी

(5) 'कश्मीर शाक्त विमर्श'

लेखक - पं॰ जगन्नाथ सिबू

प्रकाशक - शक्ति प्रकाश केन्द्र

पुरुषयार, श्रीनगर (कश्मीर) - 1989 ईस्वी

उद्यत् दिवाकरसहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम् ।
खड्गाम्बुजाढ्य कलशाममृतपात्र हस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारबिन्दाम् ॥

इस का अर्थ इस प्रकार है: जगन्माता महामाया जो एकसाथ उदय हुए प्रातःकालीन हज़ारों सूर्यो की सी आभा (दीप्ति) लिए हुए, 'वह्नित्रयार्क रजनीश ' सूर्य, चन्द्रमा और अग्निदेव जैसे प्रकाशमान तीन नेत्रों को धारण किए हुए, सटाओं से सुशोभित सिंह के स्कन्धासन पर विराजमान (शेर सवार), यज्ञोपवीत के रूप में सर्पराज को पहने हुए, खड्ग, विकसित कमल, जलपूर्ण घठ, कलश तथा अमृतपूर्ण पात्र को अपने मनोहर एवं सुशोभित चार भुजाओं में धारण किए हुए है एवं परिपूर्ण खिले एवं प्रकाशमान कमल के समान सुन्दर मुख की कान्ति को धारण करने वाली भगवती-महाराज्ञी का मैं (शरणागत भक्त) तन, मन से ध्यान करता हूँ ।

..... श्री श्री महाराज्ञी प्रादुर्भाव .....

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2005 (दुर्गाष्टमी)

प्रति : 3000

प्रकाशक : शारदा साधना केन्द्र
दिल्ली - 110095 (फोन 011 2213 6144)

मूल्य : दस रुपये

लेखक : चमन लाल राज़दान
107 - डी, पॉकेट - बी
दिलशाद गार्डन, दिल्ली - 110095
(फोन 011 2213 6144)

मुद्रक : व्यैथ ग्राफिक्स
(फोन 9818190360)